मैं एक वृक्ष हूं

प्रभात कुमार
रूड़की

मैं एक वृक्ष हूं, मेरी टहनी मेरे पत्ते
इसमें बने मधुमक्खी के छत्ते
मेरे फल, मेरे फूल, मेरे दूध, मेरे मूल
मेरे हो कर भी तुम्हारे हैं।

चूंकि मैं तुम सब के लिए समर्पित हूं
प्रकृति प्रदत्त के नाम पर अर्पित हूं
वसुधैव कुटुम्बकम तो हममें आज भी जीवित है।
नदियां न पिएं कभी अपना जल, वृक्ष न खाएं कभी अपना फल
का तत्व मुझमें सन्निहित है।

तपती धूप में शीतलता प्रदान करता हूं,
थके पथिक को सुखद,
अहसास देता हूं,
प्रकृति संरक्षण तथा शोधन करता हूं।

परन्तु विकास के नाम पर जब तुम
मेरे ऊपर आरी या कुल्हाडी चलाते हो,
मैं दर्द से बिल–बिला जाता हूं
महाकवि कालिदास की भांति
जिस डाल पर बैठे उसे ही काट रहे हो?
अंधी प्रगति के नाम पर प्रकृति को बांट रहे हो।

गलती का अहसास करके कालिदास ने महाकाव्य रच डाला था।
पर हम मूर्ख प्राणी अपनी गलती पर इतराते हैं।
वृक्षों को काट, प्रकृति की सम्पदा घटा रहे हैं।
गलती के पश्चात् क्या आज महाकाव्य नहीं लिख सकते?
जिस डाल पर बैठे उसे काट रहे हो,
क्या इससे नहीं बच सकते?

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर